कर्त्तव्य और सत्यता का घनिष्ठ संबंध

> प्रस्तावना -

कर्त्तव्य पालन और सत्यता के बीच घनिष्ठ संबंध है। जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य का पालन करता है, वह अपने कार्यों वचनों में सत्यता का व्यवहार करता है। वह ठीक समय पर उचित रीति से अच्छे कार्यों को करता है। सत्यता ही एक ऐसी वस्तु है जिससे हम संसार में मनुष्य अपना कार्यों में सफलता पा सकता है। क्योंकि संसार में कोई कभी झूठ बोलने से नहीं होता। यदि किसी घर के सब लोग झूठ बोलने लगे तो उस घर में कोई काम न होसकेगा और सब लोग बड़ा दुख झेलेंगे। इसीलिए हम लोगों को अपना कार्य में झूठ का व्यवहार नहीं करना चाहिए।

महत्व - मनुष्य के कर्त्तव्य मार्ग में एक ओर तो आत्मा के भले और बुरे कामों का ज्ञान और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है। बस मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहता है। यदि इसका मन कुछ क्षण तक दुविधा में पड़ा रहा तो स्वार्थपरता निश्चय इसे आ घेरेगी और इसका चरित्र घृणा के योग्य हो जाएगा। झूठ बोलना, पाप कार्य करना, कायरता जैसे दुर्गुणों को छोड़कर सत्य मार्ग पर चलने के लिए अपनेआप तथा दूसरों को प्रेरित करना चाहिए। हमें सबको सत्य और कर्त्तव्य का महत्व को समझाने की आवश्यक है। हमें अपने कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनने चाहिए और सत्य को खुले रूप में अपनाना चाहिए।

कर्तव्य - पालन का गुण मानव मे ही नही प्रकृति में भी सदैव से देखने को मिलता है। सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र नित्य सृष्टि को प्रकाश कर अपने कर्तव्य का पालन करते रहते है। इसी प्रकार जल और वायु प्राणी को जीवन प्रदान करते है, धरती अनेक प्रकार के पदार्थों की पूर्ति करती रहती है। जब कोई इंसान निश्छल होकर किसी तथ्य को बिना किसी स्वार्थ के जाहिर करता है तो उस इंसान को सच्चा इंसान कहा जा सकता है। जब मन, वचन, कर्म के माध्यम से सात्विकता जाहिर होती है तो उसे सत्य कहा जाता है। कुरान तथा बाइबल मे सच्चाई को ईमानदारी का नाम दिया गया है। जहाँ सच्चाई होती है वहाँ भय और अहंकार ज्यादा देर टिक नही पाता। हर व्यक्ति को अपने कर्तव्यों को जरूर निभाना चाहिए।

उपसंहार -

शिवि का मांस दान, महादेव का विषपान, योगिराज कृष्णा का गीतोपदेश आदि कर्तव्य - परायण व्यक्तियों के अनेक उदाहरण हमारे इतिहास से भरे पड़े है। कर्तव्य का ह्रास ही आरंभ होता है। एक कहावत है कि सच्चाई तथा पानी को दबाया नहीं जा सकता उसे जितना दबाया जाए, उसकी शक्ति उतनी ही ज्यादा प्रबल हो जाती है। वह अपनी दिशा स्वयं ही बना लेता है तथा सामने जरूर आता है। कर्तव्य और सत्यता हमारे जीवन मे दोनों ही महत्त्वपूर्ण भूमिका का स्थान प्राप्त करती है। हमें अपना कर्तव्य निभा लेना चाहिए और हमेशा सत्य की मार्ग पर चलना चाहिए।

कर्तव्य शब्द का अभिप्राय उन कार्यों से होता है, जिन्हें करने से व्यक्ति नैतिक रूप से प्रतिबद्ध होता है। मनुष्य सत्य बोलना सबसे श्रेष्ठ मानता है, यही उसका परम धर्म है। मानव को यथाशक्ति और आवश्यकतानुसार कार्य करना ही उसका कर्तव्य कहलाता है। मानव जीवन कर्तव्यों का भण्डार है उसके कर्तव्य उसकी अवस्थानुसार छोटे और बड़े होते हैं। जीवन में सत्य का भी बहुत महत्व है।

कर्तव्य और सत्यता की जरूरी -

कर्तव्य को पूर्ण करने से जीवन में उल्लास, आत्मिक शान्ति और सुख मिलता है। बचपन में माता - पिता तथा परिजनों की आज्ञा मानना ही कर्तव्य कहलाता है। माता - पिता तथा परिजनों से सत्य बोलना भी आवश्यक है। हमें कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए। सत्य बोलने से समाज में हमारा सम्मान हो सकेगा। और हम आनंदपूर्वक अपना समय बिता सकेंगे। क्योंकि सच्चे आदमी को सभी चाहते हैं और झूठ से सभी घृणा करते हैं। कर्तव्य वह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परम धर्म है। इसका आरंभ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्तव्य माता - पिता के ओर और माता - पिता का कर्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। सत्य बोली का सबसे सुंदर स्वरूप है। जो व्यक्ति जीवन में सत्यता के गुण को अपनाते हैं उनमें बड़े मौलिक बदलाव नजर आते हैं। प्रत्येक युग में सत्य हमेशा विजय हुआ है तथा समाज ने इसे अपना दैवीय आदर्श माना है। मानव जीवन केलिए सत्य एक अटूट अंग है। कर्तव्य का पूर्ण - पूर्ण पालन करना हम लोगों का परम धर्म है। कर्तव्य करना न्याय पर निर्भर है।